Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Review Article

गुरु जम्भेश्वर (जाम्भोजी) का प्रकृति प्रेम

डॉ. असलम अंसारी

असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, चाँद गर्लस स्कूल महाविद्यालय, इटवा, सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: * डॉ. असलम अंसारी

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19436916

सारांश

गुरु जम्भेश्वर (जाम्भोजी) का प्राकृतिक प्रेम मुख्य रूप से, समी जीवों और इंसानों पर दया करना, और प्रेम की भावना रखना, हरे वृक्षों के कटान को रोकना, पेड़- पौधे लगाना है। जम्भेश्वर जी को पशुओं से बहुत प्रेम था, उन्होंने 27 वर्षों तक गाय की सेवा की, इससे लगता है, कि उनको गाय को पालने के पक्ष में थे और पानी, ईंधन और दूध को छानकर उपयोग करना, जिससे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण हो। जंभेश्वर जी को साफ सफाई बहुत पसंद थी आंतरिक हो या बाहरी वह साफ सफाई का हमेशा ध्यान रखते थे सुबह उठकर साफ सफाई करना स्नान करना अच्छे वस्त्र का धारण करना यह उनका पहला काम होता था

वह हमेशा शांति और अहिंसा का ध्यान रखते थे जिससे प्राकृतिक प्रेम बना रहे ताकि लोगों को भी उनको देखकर प्राकृतिक प्रेम होने लगे वह हमेशा शांति बनाए रखने के अपील करते थे और हमेशा कहते थे अहिंसा ही जीवन है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 02-02-2026
- **Accepted:** 28-03-2026
- **Published:** 06-04-2026
- **MRR:**4(4); 2026: 69-70
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

डॉ. असलम अंसारी. गुरु जम्भेश्वर (जाम्भोजी) का प्रकृति प्रेम. Indian J Mod Res Rev. 2026;4(4):69-70.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

कुंजी शब्द: जीव दया, वृक्ष संरक्षण, पशु सेवा, जल और ईंधन की शुद्धि, स्वच्छता |

© 2026 डॉ. असलम अंसारी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

परिचय

वर्तमान भौतिकवादी युग में विश्व की सबसे बड़ी समस्या असंतुलित पर्यावरण है। 21वीं सदी में मानव अपनी भौतिक व आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों-जल, जंगल, भूमि और वन्यजीवों-का अत्यधिक दोहन कर रहा है। इससे प्रकृति और मानव के बीच का संतुलित संबंध टूटता जा रहा है। प्रकृति मानव जीवन का आधार है, यह केवल भोजन, वस्त्र और आवास ही नहीं, बल्कि जीवन से जुड़ी सभी आवश्यकताएँ प्रदान करती है। वृक्षों की कटाई, कंक्रीट के जंगलों का विस्तार और प्रकृति के प्रति संवेदनहीनता के कारण जीवन की सुगमता और सौंदर्य नष्ट हो रहा है। प्रकृति संरक्षक मानव जीवन की रक्षा का मार्ग है, जैसा कि गुरु जाम्भोजी के विचारों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं

गुरु जाम्भोजी (जाम्भेश्वर जी) को जीव और प्रकृति का महान संरक्षक माना जाता है। उन्होंने मानव समाज को यह संदेश दिया कि जीव, वन और जल ही जीवन का वास्तविक आधार हैं। उनके अनुसार प्रकृति का संरक्षण करना ही मानव का सबसे बड़ा धर्म है।

सगुरु जांभोजी एवं पर्यावरण संरक्षण

गुरु जाम्भोजी जी ने अपने 29 नियमों के माध्यम से जीवों की रक्षा, वृक्षों के संरक्षण तथा स्वच्छ पर्यावरण पर विशेष बल दिया। उन्होंने जीव हत्या का विरोध किया और कहा कि प्रत्येक जीव में जीवन समान रूप से मूल्यवान है। पेड़ों को काटने से मना किया तथा वृक्षारोपण को जीवन रक्षा का साधन बताया। उनका मानना था कि जब तक मनुष्य प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर नहीं चलेगा, तब तक मानव जीवन सुरक्षित नहीं रह सकता। उन्होंने जल, वन और वन्य जीवों की रक्षा को सामाजिक कर्तव्य माना।

मध्य युग में मरुस्थलीय क्षेत्र में सगुरु जांभोजी ने जल, जंगल, भूमि और जीव-जंतुओं के संरक्षण पर आधारित जीवन-दर्शन का प्रतिपादन किया। उन्होंने जल की पवित्रता और महत्ता बताते हुए पाहल (मंत्रित जल) के माध्यम से अपने अनुयायियों को दीक्षित किया तथा वृक्षों की रक्षा को जीवन का अनिवार्य अंग बताया।

सगुरु जांभोजी की पर्यावरण-दृष्टिः व्याख्या

"हरी कंकड़ी मंडप मेड़ी जहाँ हमारा वासा"

हरियाली और वृक्ष हैं, वही मानव का वास्तविक निवास है। अर्थात् मानव और प्रकृति का सह-अस्तित्व अनिवार्य है। इसी भाव को वे आगे कहते हैं

"मोरे धरती ध्यान वनस्पति वासो ओजु मंडल छायो",

जिसका आशय है कि धरती, वनस्पति और जीव-जगत की रक्षा करना ही मानव का धर्म है।

इन शाश्वत सूक्तियों में पर्यावरण संरक्षण का गूढ़ ज्ञान निहित है। बिश्नोई पंथ की संहिता में सगुरु जांभोजी ने जगत कल्याण से ओतप्रोत 29 नियमों (पंथ आधार) का समावेश किया, जिनका उद्देश्य जल, वन, भूमि और जीव-जंतुओं का संरक्षण है।

"पाणी वाणी इधणी इतणा लीणे छाण"

पानी का उपयोग सदैव छानकर और सोच-समझकर करना चाहिए। ऐसा करने से स्वास्थ्य सुरक्षित रहता है और जल की शुद्धता बनी रहती है। इस प्रकार सगुरु जांभोजी की शिक्षाएँ केवल धार्मिक नहीं, बल्कि आधुनिक पर्यावरण संरक्षण की वैज्ञानिक और नैतिक आधारशिला हैं, जो आज भी पूर्णतः प्रासंगिक हैं।

"हर दिन जल छाणण को ईंदो, जीवाणी जल राखे जूड़ो।

जो पहचाणो नदी निवारण, जल छाण्यो चाडसी परवाण॥

का आशय है कि प्रतिदिन जल को छानकर ही उपयोग में लाना चाहिए, क्योंकि जल ही जीवन का आधार है। जो व्यक्ति नदियों के महत्व को पहचानता है, वही जल की शुद्धता और संरक्षण का पालन करता है। यह नियम जीव-दया और मानव स्वास्थ्यकृदोनों की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

जांभोजी साहित्य में प्रकृति की समस्त संपदाओंकृजल, वन, भूमि और जीव-जंतुओं के संरक्षण एवं संवर्धन के स्पष्ट उदाहरण मिलते हैं। जांभोजी की वाणी के अनुयायियों ने पर्यावरण संरक्षण के मूल तत्वों को आत्मसात करते हुए वृक्षों और वन्य जीवों की रक्षा के लिए अनेक अहिंसात्मक आत्मोत्सर्ग किए, जिनमें खेजड़ली बलिदान विश्व-इतिहास की एक अद्वितीय घटना है। यह वृक्ष-रक्षा हेतु किया गया पहला संगठित अहिंसात्मक बलिदान माना जाता है, जिसने संसार को पर्यावरण संरक्षण का अमिट संदेश दिया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वर्तमान परिदृश्य में गुरु जाम्भोजी का चिंतन. जांभाणी साहित्य प्रकाशन; 2019; पृ. 122.
2. वर्तमान परिदृश्य में गुरु जाम्भोजी का चिंतन. जांभाणी साहित्य प्रकाशन; 2019; पृ. 122.
3. बिश्नोई सुरेन्द्र, सेवक राजकुमार. गुरु जाम्भोजी का वैश्विक चिंतन. जांभाणी साहित्य प्रकाशन, बीकानेर; (स. अ.).
4. बिश्नोई सुरेन्द्र. गुरु जाम्भोजी का वैश्विक चिंतन. जांभाणी साहित्य प्रकाशन, बीकानेर; (स. अ.).
5. बिश्नोई कृष्णलाल, साहू बनवारी लाल, बिश्नोई सुरेन्द्र कुमार. जांभाणी साहित्य: विविध आयाम. श्री गुरु जम्भेश्वर महाराज चैरिटेबल ट्रस्ट, बीकानेर; (स. अ.).

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the corresponding author

डॉ. असलम अंसारी, शिक्षक, शिक्षा विभाग, चाँद गर्ल्स स्कूल महाविद्यालय, इटवा, सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश में कार्यरत हैं। वे शिक्षा क्षेत्र में विद्यार्थियों के विकास और शिक्षण विधियों के सुधार में सक्रिय हैं। उनका कार्य मुख्यतः पाठ्यक्रम विकास, शैक्षिक अनुसंधान और छात्र-केंद्रित शिक्षण में केंद्रित है।

© 2026 डॉ. असलम अंसारी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/